B.A. (Hons & Sub) Part-I
Paper-II
Abnormal Psychology

By- Dr. Ramendra Kumar Singh.
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon
(Buxar) VKSU, Ara

प्रश्न:- दैनिक जीवन की मनोविकृतियों से आप क्या समझते हैं? इसके विभिन्न प्रकारों के बारे में लिखें।

या,

दैनिक जीवन की मनोविकृतियों के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा करें।

प्राय: हम अपने दैनिक जीवन में कोई न कोई भूलें करते हैं। कुछ भूलें आकारण एवं महत्वहीन होती हैं तो कुछ भूलें उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक होती हैं इनके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य ही होता है। आकारण एवं संयोगवश घटित घटनाओं एवं भूलों की व्याख्या संयोग-सिद्धान्त (Chance-theory) के आधार पर की जाती है क्योंकि ऐसी भूलों का ज्ञान व्यक्ति को रहता है और उसे सुधारना भी चाहता है।

दूसरी तरफ कुछ भूलें ऐसी होती हैं जिनके पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है, ऐसी भूलों के पीछे अचेतन मन की दमित इच्छाओं का हाथ होता है। इनकी व्याख्या कारण-प्रभाव सिद्धान्त (Cause-effect theory) के आधार पर की जाती है। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन सिगमंड फ्रायड ने की। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Psychopathology of everyday life' में ऐसी दैनिक जीवन की मनोविकृतियों की विशद चर्चा की है।

फ्रायड का इस संदर्भ में कहना है कि "जब अवांछित इच्छाओं की तुष्टि चेतन स्तर पर नहीं हो पाती हैं तो वे अचेतन मन में जाकर दमित हो जाती हैं, लेकिन ऐसी इच्छाएँ चेतना में आकर

दैनिक जीवन की मनोविकृतियों के प्रकार :-

दैनिक जीवन में कई ऐसी भूलें होती हैं, जिसका कारण अचेतन होता है। ऐसी ही कुछ प्रमुख मनोविकृतियाँ निम्नलिखित हैं :-

(1.) बोलने की भूल :- सामान्यतः हम अपने प्रतिदिन की जीवन में बोलने की भूलें करते हैं। बोलना चाहते हैं कुछ, लेकिन कुछ ऐसी बातें बोल देते हैं जिसे सोचा भी नहीं था। ऐसी भूलें संयोगवश नहीं होती हैं बल्कि अचेतन मन की दमित विचारों के चलते होती हैं। किसी की प्रशंसा करते-करते विरोध में बोल देना, कुमारी की जगह श्रीमती बोलना। ये सब अचेतन की दमित इच्छाओं के चलते होता है। फ्रायड के ही शब्दों में :- "व्यक्ति बोलने की भूलों के माध्यम से अपनी दमित इच्छाओं की संतुष्टि करता है, जिससे उसका मानसिक द्वन्द्व दूर हो जाता है। अतः ऐसी भूलें कारणवश एवं सोद्देश्य होती हैं।"

(2.) लिखने की भूलें :- प्रायः यह देखने को मिलता है कि हम लिखना कुछ चाहते हैं लिख कुछ और देते हैं। ऐसी गलतियों में किसी महत्वपूर्ण शब्द का छुट जाना, सही शब्द की जगह गलत शब्द का लिख देना, बाद वाले शब्द को पहले लिख देना। यह देखने को मिलता है कि ऐसी गलतियाँ व्याकरण के अच्छे जानकार लोग भी करते हैं। फ्रायड के अनुसार इसके पीछे अचेतन का हाथ होता है। ब्राउन ने इसका एक सुन्दर उदाहरण दिया है उनके एक मित्र को शिकागो जाना था पर पत्र में लिफाफे पर पता इंगलैण्ड का लिख दिया।

(3) नामों को भूलना :- हम अपने दैनिक जीवन में अपने प्रिय जनों का नाम, स्थान का नाम, तिथि आदि भूल जाते हैं और ऐसी भूलों का कारण भी पता नहीं चलता है। फ्रायड का मानना है कि "भूलना एक अचयनात्मक क्रिया है हम उन्हीं चीजों को भूलने चाहता है अचेतन रूप से उसे ही भूलते हैं।" अतः हम उन्हीं के नामों को भूलते हैं जिन्हें भूलना चाहते हैं।

(4) छपाई की भूलें :- छपाई सम्बन्धी भूलों की गणना मनोवृत्तियों के अन्तर्गत की जाती है। इसके पीछे भी अचेतन का हाथ रहता है। इसमें रिडर, सम्पादक, कम्पोजिटर कई लोग जिम्मेदार होते हैं।

Scanned with CamScanner

इतना अवश्य होता है कि इसके पीछे भी अचेतन में दमित प्रेम एवं घृणा के अतृप्त भाव गलतियों के माध्यम से प्रकट होते हैं। इंग्लैण्ड में डेमोक्रेटिक अखबार में किसी उत्सव का समाचार में राजकुमार प्रिंस को 'क्राउन प्रिंस' छापने के जगह पर क्लाउन प्रिंस (विदूषक, मसखरा प्रिंस) छाप दिया। इसके अगले दिन बवाल मच गया। फलतः सुधार करके Crow Prince छापा। पुनः बवाल हुआ। बाद में विश्लेषण करने पर ज्ञात हुआ कि उस अखबार के अधिकांश कर्मी उस राजकुमार से असंतुष्ट रहते थे। इसलिए अचेतन रूप से ऐसा हो रहा था।

(5) पहचान की भूल :- दैनिक जीवन में प्रायः ऐसी नौबत आती है, जब हम किसी व्यक्ति या स्थान की सही पहचान करने की भूलें करते हैं। किसी अपरिचित व्यक्ति को अपना परिचित मित्र या सम्बन्धी समझ बैठते हैं। कोई व्यक्ति अथवा वस्तु वहीं मौजूद रहती है, पर हम देख नहीं पाते हैं। फ्रायड ने इस तरह की घटनाओं को अचेतन में दमित इच्छा-प्रवाह बताया है। पहचानने की भूलें वास्तव में Mental Conflict के कारण होती हैं। जब कोई अपने प्रिय से मिलने की उम्मीद पाले रहता है तो Mental Set बन जाता है फलतः दूसरे अपरिचित व्यक्ति या चीज को भी उसी रूप में Perceive करता है। इसी तरह जब किसी से घृणा करते या मिलना नहीं चाहते हैं तो उपस्थित रहने पर भी देख नहीं पाते हैं।

(6) वस्तु को बेजगह रखने की भूलें :- कभी-कभी हम ऐसी गलतियाँ करते हैं। कोई वस्तु ले जाकर ऐसी जगहों पर छोड़ देते हैं और बाद में जाकर ढूंढ लाता है। चाभी का गुच्छा, छाता, कलम आदि को अक्सर हम कहीं रख देते हैं। फ्रायड ऐसी भूलों के लिए भी अचेतन को जिम्मेवार मानते हैं। एक बूढ़ा व्यक्ति जब भी ससुराल जाता था अपना छाता, चश्मा कुछ न कुछ छोड़ आता था फिर वह जाकर लाता था। दरअसल वह ससुराल में अधिक से अधिक रहना चाहता था पर लोगों की हँसाई से नहीं रह पाता है। अचेतन रूप से दमित इच्छा छाता आदि छोड़ने पर बाध्य करती थी कि वह दुबारा जा सके।

(7) प्रतीकात्मक क्रियाएँ (Symbolic Activities) व्यक्ति कभी-कभी अनजाने में भी कुछ ऐसी क्रियाएँ कर देता है जिसे लोग निरर्थक तथा अकारण मानते हैं। पैर हिलाना, अंगूठी निकालना पहनना, चाभी के गुच्छे को नचाना आदि-आदि। इस संदर्भ में मनोविश्लेषकों

का मानना है कि ऐसी क्रियाएँ प्रतीकात्मक होती हैं। अचेतन में बैठी प्रेरणाओं की संतुष्टि होती है। अँगुठी को बार-बार पहनना एवं निकालना इस बात का प्रतीक है कि वह या तो अपने Sex Partner से नराज है या कामुकता की भूख से परेशान है।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ वास्तव मे हमारे अचेतन में दमित इच्छा-प्रवाह है जिसके माध्यम से हम चिंता एवं तनाव के दुष्परिणामों से बचते है. तथापि ~~एडलर~~ एवं युंग इसमें Personal unconscious के साथ ही साथ Racial unconscious का भी हाथ मानते है जिसे फ्रायड अनदेखी किए है। क्योंकि खेलते खेलते या ~~काम~~ काम करते समय हम कभी कभी जानवरों की बोलियाँ बोलने लगते है, जो Racial unconscious की उपज होते है, जो भी है दैनिक जीवन की मनोविकृतियाँ एक अनोखी एवं दिलचस्प सम्प्रत्यय है।

R.K. Singh
29.05.2020
Dr. Ramendra Kr. Singh
D. K. College
Dumraon